ISSN : 2582-6360

विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 25 | अंक 07 | विक्रम संवत् 2077-78 जुलाई 2021 | पृष्ठ 34

संरक्षक : विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी

प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान

(जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)

कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Narayan

ISSN : 2582-6360

विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 25 | अंक 07 | विक्रम संवत् 2077-78 जुलाई 2021 | पृष्ठ 34

परामर्शदाता
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
पण्डित अनन्त शर्मा
डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर
प्रो. कैलाश चतुर्वेदी
डॉ. शीला डागा
प्रो. (डॉ.) गणेशीलाल सुथार

प्रधान सम्पादक
सोहन लाल गर्ग

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

सह-सम्पादक
डॉ. रामदेव साहू
डॉ. रघुवीर प्रसाद शर्मा
तिबोर कोकेनी
श्रीमती अन्या वुकादिन

सहयोग
नवीन जोशी

- प्रमुख संरक्षक -
परम महासिद्ध अवतार श्री अलखपुरी जी
परम योगेश्वर स्वामी श्री देवपुरी जी

- प्रेरणास्त्रोत -
भगवान् श्री दीपनारायण महाप्रभुजी

- संस्थापक -
परमहंस स्वामी श्री माधवानन्द जी

- संरक्षक -
विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस
श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी

- प्रबन्ध सम्पादक -
महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी

प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान
(जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)
कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Website : vgda.in | **Youtube :** www.youtube.com/c/vishwagurudeepashram | **E-mail :** jaipur@yogaindailylife.org

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय		3
2.	श्रीगायत्रीस्तोत्रसप्तकम्	प्रो.(डॉ) ताराशंकरशर्मा पाण्डेय	4
3.	''दैनिक जीवन में योग'' एक पद्धति	विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरी	6
4.	प्राचीन भारत में वृष्टि और अनावृष्टि	देवर्षि कलानाथ शास्त्री	11
5.	शेषनाग एवं शेषशायी नारायण	डॉ. रामदेव साहू	15
6.	श्रीमद् दादू दर्शन (जीवब्रह्मविचारः)	डॉ. दयाराम स्वामी	19
7.	प्रेम की भावदशा	संजीव कुमार माथुर	20
8.	हिन्दी सिनेमा और गांधी	डॉ. वत्सला	21
9.	सुचिन्द्रम्	नवीन कुमार जग्गी, आशना तथा सायशा	27
10.	राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्	डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर	31

विश्वदीप दिव्य संदेश पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क **800/- रूपये**

खाता संख्या : 5013053111

IFS Code : KKBK0003541

मुद्रण : **कन्ट्रोल पी**, जयपुर - मो. : 9549666600

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का सप्तम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम प्रो. (डॉ.) ताराशंकर पाण्डेय विरचित श्रीगायत्रीस्तोत्रसप्तकम् प्रातः स्मरण एवं सूर्योपासना की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी जी द्वारा लिखित 'दैनिक जीवन में योग-एक पद्धति' लेख भारतीय योगविज्ञान विषयक प्रेरणा प्रदान करता है। स्वामी जी ने योग को शरीर बुद्धि चेतना एवं आत्मा के विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठापित किया है, जो इस भारतीय पुराविद्या के गौरव से अवगत कराता है। तृतीय लेख देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'प्राचीन भारत में वृष्टि एवं अनावृष्टि' विषयक है। इसमें वृष्टिविज्ञान विषयक मानकों के सन्दर्भ में लोकप्रवृत्ति पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'शेषनाग एवं शेषशायी नारायण' लेख में ब्रह्माण्ड के मूलाधार शेषनाग के वैज्ञानिक स्वरूप को बतलाया गया है। तत्पश्चात् डॉ. दयाराम स्वामी के लेख 'श्रीमद्दादूदर्शनम्' में जीवब्रह्मविषयक दार्शनिक चिन्तन का प्रस्तुतीकरण हुआ है। 'प्रेम की भावदशा' संजीवकुमार माथुर द्वारा प्रस्तुत बोधकथा है, जो प्रेम के व्यावहारिक स्वरूप को समझाने के उद्देश्य से लिखी गयी है। इसके अनन्तर डॉ. वत्सला द्वारा लिखित 'हिन्दी सिनेमा एवं गाँधी' लेख में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के जीवन दर्शन की प्रस्तुति में सिनेमा के योगदान को दर्शाया गया है। श्री नवीन कुमार जग्गी द्वारा लिखित 'सुचिन्द्रम्' लेख भारतीय संस्कृति के आदर्श तीर्थस्थान के समग्र परिचय को उपस्थापित करता है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

श्रीगायत्रीस्तोत्रसप्तकम्

प्रो. (डॉ.) ताराशंकरशर्मपाण्डेय
जयपुरम्

भूदेवमातापरा

कल्याणाकरकल्यकालकलिता कारुण्यकल्लोलिनी
कल्याणी कमलाधिकारकमना काम्या कलानां निधिः।
सन्ध्यायां जपतो जनस्य कुरुते सार्वत्रिकं मङ्गलं
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 01।।

यास्ते द्विजाराधिता

भानोर्भर्गभवा भवातिविभवा भाग्याभ्रमातङ्गिनी
भद्राधारविभावभूतिलसिता भूयाद्भवाभीप्सिता।
भक्त्युद्दीप्तमनःप्रसन्नवदना यास्ते द्विजाराधिता
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 02 ।।

भास्वज्जगच्चेतना

ओजोमण्डलदीप्तभानुवलया भास्वज्जगच्चेतना
ब्रह्मास्वादसहोदरी सुमनसां सौरभ्यकेन्द्रस्थितिः।
मन्त्राधीनप्रसन्नताऽसुसरिता-स्रोतोरसा राजते
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 03 ।।

टिप्पणी-

1. **सुमनसाम्** = पुंसि देवतानां विदुषां वा, चेत् स्त्रीलिंगे, 'सुष्ठु मन्यते जनैर्मनोज्ञत्वात् शोभनं मनोऽस्यामिति वा सुमनाः सान्ता स्त्रीलिङ्गा च ।'स्त्रियां सुमनसो भूम्नि पुष्पे जातौ च भेदतः । विदुष्यति यदा दृष्टस्तदा भेदेन शिष्यते॥' इति व्याडिः ।'सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्रियाम् ।' इति सान्तेषु मेदिनी ।
2. **सौरभ्यम्** = सौरभम्, सौगन्धम्, गुणगौरवं वा। **3. स्त्रोतोरसा** = मूलोद्गमभूमिः, रसा = भूमिः।

ब्रह्मैकयोगात्मवित्

सन्ध्यावन्दनकर्मपुण्यविशदाऽऽत्मालोकतेजोद्विजो
भानोर्लोकमनोनिवेशरसित-ब्रह्मैकयोगात्मवित्।
सम्यग्ज्ञानपरायणाधिकृतये मोक्षं प्रदत्ते वरं
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 04 ।।

धर्मास्पदे शोभते

कामार्थौ भवतां शरीरनिरतौ धर्मार्थनिष्ठायुता-
वाद्यन्तौ टकितौ पराधिकरणौ धर्मश्च मोक्षस्ततः।
आत्मारामविहारभूमिलसिते धर्मास्पदे शोभते
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 05 ।।

माङ्गल्यनिःश्रेयसम्

सन्ध्योपासनजापपुण्यप्रसवप्राप्यानुसन्धानहा
वैकुण्ठाश्रयमानसोत्फलितचित् षट्कर्मसिद्धोऽस्ति ते।
सद्धर्माध्वगसाधवे सुददते माङ्गल्यनिःश्रेयसं
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 06 ।।

या सन्ततं त्रायते

सर्वे वैष्णवशैवशाक्तप्रमुखाः सन्ध्याक्रियातत्पराः
प्रातःकालजपे समाधिनिपुणा गायन्ति सेवापराः।
गायन्तं बहुमानरागपुरतो या सन्ततं त्रायते
गायत्री रविमण्डलाणुप्रसवा भूदेवमातापरा।। 07।।

इति जयपुरवास्तव्येन प्रो.ताराशंकरशर्मपाण्डेयेन विरचितं
गायत्रीस्तोत्रसप्तकं पूर्णतामगात्।

''दैनिक जीवन में योग'' एक पद्धति

शरीर, बुद्धि, चेतना एवं आत्मा का विज्ञान

विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु ।। सह वीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

परमात्मा, हमें सुरक्षा एवं आशीष प्रदान करें। शाश्वत ज्ञान के मार्ग के अन्त तक चलने की शक्ति प्रदान करें, शाश्वत ज्ञान हमारी सहायता करें ताकि हम किसी के सामने झुकें नहीं, और शाश्वत के मार्ग पर एक साथ चलते रहें।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

हर मानव की इच्छा स्वयं तथा पर्यावरण से समरस होकर जीवित रहने की है। आधुनिक युग में अधिक शारीरिक और भावात्मक इच्छायें लगातार जीवन के अनेक क्षेत्रों पर भारी हो रही हैं, परिणामतः अधिकाधिक खिंचाव, चिंता, अनिद्रा जैसे शारीरिक और मानसिक तनावों से पीड़ित रहते हैं। उनकी शारीरिक सक्रियता और उचित व्यायाम में एक असंतुलन बन गया है। यही कारण है कि स्वस्थ बने रहने और उसमें सुधार के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक समरसता बनाए रखने के लिए नई नई विधियों और तकनीकों का महत्व बढ़ गया है।

मैने पश्चिमी देशों में बहुत वर्ष सक्रियता से बिताए हैं। मैं आधुनिक जीवनपद्धति और आज के लोगों के सम्मुख विद्यमान शारीरिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं से भलीभाँति परिचित हो गया हूँ। जो ज्ञान और अनुभव मुझे प्राप्त हुआ, उससे मुझे 'दैनिक जीवन में योग' की प्रणाली विकसित करने का अवसर मिला। यह प्रणाली नियमबद्ध और आनुक्रमिक है, जिसमें जीवन के हर मौके के लिए कुछ मूल्यवान् अवसरों और जीवन के सभी क्षेत्रों को एकत्र किया गया है। आयु या शारीरिक बनावट का ख्याल न करते हुए यह प्रणाली सभी लोगों के लिए योग का श्रेष्ठ पथ प्रशस्त करती है। आज के व्यक्तियों की आवश्यकताओं को समाविष्ट करने के लिए इस प्रणाली को विकसित करते समय आधुनिक समाज में मौजूद स्थितियों पर ध्यान दिया गया था। ऐसा करते समय प्राचीन शिक्षाओं के मूल स्वरूप और प्रभाव को भी अनदेखा नहीं किया गया।

'योग' शब्द का उद्गम संस्कृत भाषा से है और इसका अर्थ 'जोड़ना, एकत्र करना' है। योग के अन्तर्गत व्यायामों का एक पवित्र प्रभाव होता है और यह शरीर, मन, चेतना और आत्मा को संतुलित करता है। योग हमें दैनन्दिन की

माँगों, समस्याओं और परेशानियों का मुकाबला करने में सहायक होता है। योग स्वयं के बारे में समझ, जीवन का प्रयोजन और ईश्वर से हमारे संबंध की जानकारी विकसित करने के लिए सहायता करता है। आध्यात्मिक पथ पर योग हमको ब्रह्माण्ड के स्व के साथ वैयक्तिक स्व के शाश्वत परमानंद मिलन और सर्वोच्च ज्ञान को प्रशस्त करता है। योग ब्रह्मांडमय आत्मानुभूति का उत्कृष्ट सिद्धान्त है। यह जीवन का प्रकाश तथा विश्व की सृजनात्मक चेतना है, जो सदैव सजग रहती है और कभी सोती नहीं; जो हमेशा थी, हमेशा है और हमेशा होगी-रहेगी।

हजारों वर्ष पहले भारत में ऋषियों (बुद्धिजीवियों और संतों) ने अपनी ध्यानावस्था में प्रकृति और ब्रह्माण्ड की खोज की थी। उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक शासनों के कानूनों का पता किया था और विश्व में संबंधों की अंतर्दृष्टि प्राप्त की थी। उन्होंने ब्रह्माण्ड के नियमों, प्रकृति के नियमों तथा तत्त्वों, धरती पर जीवन और ब्रह्माण्ड में कार्यरत शक्तियों और ऊर्जाओं की बाह्य संसार और आध्यात्मिक स्तर दोनों के आधार पर ही जांच की थी। पदार्थ और ऊर्जा की एकता, ब्रह्माण्ड का उद्गम और प्राथमिक शक्तियों के प्रभावों का वर्णन और स्पष्टीकरण वेदों में किया गया है। इस ज्ञान का पर्याप्त अंश पुनः खोजा गया और आधुनिक विज्ञान द्वारा उसकी पुष्टि सत्य अनुभूत की गई है।

इन अनुभवों और अंतर्दृष्टियों से एक अति दूरगामी और योग नाम से ज्ञात प्रणाली प्रारम्भ हुई और उसने हमको शरीरिक स्वास्थ्य, एकाग्रचित्तता, तनावहीनता और ध्यान के लिए व्यवहारिक अनुदेश दिए हैं। इसके विविध अभ्यास पिछले हजारों वर्षों से सत्य सिद्ध हुए हैं और उन्हें लाखों-करोड़ों लोगों ने सहायक एवं लाभदायक पाया है।

'दैनिक जीवन में योगपद्धति' विश्वव्यापी योगकेन्द्रों, प्रौढ़ शिक्षाकेन्द्रों, स्वास्थ्य-संस्थाओं, दक्षता और खेलकूद (Fitness × Sports Club), पुनःस्थापनकेन्द्रों और स्वास्थ्यविहारों (Health Resorts) में सिखायी जाती है। यह सभी आयुवर्गों के लिए समीचीन है, उपयुक्त है -इसके लिए किसी 'करतबी' बुद्धि की आवश्यकता नहीं है और यह अयोग्य, विकलांग, बीमार और स्वास्थ्यलाभ करने वाले सभी व्यक्तियों को योगाभ्यास करने की संभावना प्रदान करती है। इसका नाम स्वयं इस बात का द्योतक है, कि योग का प्रयोग 'दैनिक जीवन में' किया जा सकता है और किया भी जाना चाहिए।

व्यायाम स्तरों का निर्धारण चिकित्सकों से परामर्श के बाद किया गया है। इस प्रकार-कथित नियमों और सावधानियों के पर्यवेक्षण के साथ-किसी भी व्यक्ति द्वारा घर पर स्वतंत्र रूप से अभ्यास किया जा सकता है। 'दैनिक जीवन में योग' एक परम्परागत प्रणाली है, जिसका अर्थ है कि इसमें न केवल शारीरिक, अपितु मानसिक और आध्यात्मिक पक्षों पर भी विचार किया जा सकता है। सार्थक-सकारात्मक विचार दृढ़ता, अनुशासन, लक्ष्य के प्रति अभिविन्यास, प्रार्थना के साथ-साथ दयालुता और समझ, आत्मज्ञान और आत्मानुभूति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

'दैनिक जीवन में योग' के मुख्य लक्ष्य हैं – शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक स्वास्थ्य, आत्मानुभूति या हमारे अपने अंदर दिव्यात्मा की अनुभूति।

इन लक्ष्यों की प्राप्ति निम्नलिखित द्वारा होती है –

- सभी जीवधारियों के प्रति प्रेम और सहायता-भाव
- जीवन के प्रति सम्मान और प्रकृति व पर्यावरण का संरक्षण
- मानसिक शांति
- पूर्ण शाकाहारी भोजन
- शुद्ध विचार और सार्थक एवं सकारात्मक जीवन शैली
- शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास
- सभी राष्ट्रों, संस्कृतियों और धर्मों के प्रति सहानुभूति एवं सहनशीलता

शारीरिक स्वास्थ्य – शरीरिक स्वास्थ्य का जीवन में आधारभूत मूल महत्व है। जैसा कि स्विट्जरलैण्ड में जन्मे चिकित्सक, पैरासैलसस ने बहुत ठीक कहा है : 'स्वास्थ्य ही सब कुछ नहीं है, किन्तु स्वास्थ्य के बिना सब कुछ शून्य है।' स्वास्थ्य को बनाने और उसको संजोये रखने के लिए शारीरिक व्यायाम, आसन, श्वास-व्यायाम (प्राणायाम और तनावहीनता, विश्राम, शिथिलता, आदि) तकनीकें हैं।

'दैनिक जीवन में योग' में श्रेष्ठ आसनों और प्राणायामों को अष्टस्तरीय प्रणाली में बाँधा गया है, जिसका प्रारम्भ 'सर्वहितासन' (वे आसन व्यायाम जो हर व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं) से है। अन्य भाग इस तैयारी स्तर के बाद आते हैं, और आसनों और प्राणायामों के अभ्यास से क्रमशः आगे बढ़ते जाते हैं। अनेक विशेष कार्यक्रम आधारभूत व्यायामों से विकसित किये गये हैं-'पीठ दर्द के लिए योग', 'जोड़ों के लिए योग', 'वरिष्ठों के लिए योग', 'प्रबन्धकों के लिए योग' 'बच्चों के लिए योग'इत्यादि। अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए 'दैनिक जीवन में योग' की प्रक्रिया में अन्य महत्वपूर्ण व्यायाम 'हठयोग' है, जो शुद्धिकरण की तकनीक है। इनमें गहरी तनावहीनता 'योगनिद्रा' एकाग्रता व्यायाम (यथा त्राटक) के साथ साथ मुद्राएं और बन्ध (विशेष योगतकनीक) भी सम्मिलित हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए एक और बड़ा कारक है- वह भोजन, जो हम करते हैं। जो कुछ हम खाते हैं वह हमारे शरीर और मन, हमारे स्वभाव और गुण दोनों को ही प्रभावित करता है। संक्षेप में हम जो खाते हैं, उसका प्रभाव हमारे अपने अस्तित्व पर होता है। भोजन हमारी शारीरिक ऊर्जा, जीवन शक्ति एवं हमारे अस्तित्व का स्रोत है। संतुलित और स्वास्थ्यप्रद भोजन में सम्मिलित हैं- अनाज, सब्जियाँ, दालें, फल, मेवे, दूध और दुग्ध पदार्थ साथ ही मधु, अंकुर, सलाद बीज, जड़ी बूटियाँ, मसाले, मूल रूप में या तुरंत तले पकाए हों। जिन भोजनों को परित्याग करना

है, वे हैं पुरानी बासी, पुनः गरम किये हुए, प्रकृति परिवर्तित खाद्य, मांस, सभी मांस उत्पाद, मछली और अंडे हैं। शराब, निकोटिन और मादक पदार्थों से बचना भी सर्वोत्तम है, क्योंकि ये भी हमारे स्वास्थ्य को शीघ्र नष्ट कर देते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

सामान्यतः हम मन और इंद्रियों को नियंत्रण में रखने की अपेक्षा इनसे ही जीवन में चलते हैं । तथापि मन पर नियंत्रण करने के लिए हमें इसे आंतरिक विश्लेषण के अधीन लाना चाहिए और इसको शुद्ध करना चाहिए। नकारात्मक विचार और आशंकाएँ हमारे नाडी तंत्र में और उसके द्वारा शारीरिक कार्य में एक असंतुलन पैदा करते हैं। यह बहुत सारी बीमारियों और दुःख का कारण है। विचारों की स्पष्टता, आंतरिक स्वतंत्रता, संतोष और एक स्वस्थ आत्मविश्वास मानसिक कल्याण का आधार है। यही कारण है, कि हम क्रमिक रूप से अपने नकारात्मक गुणों और विचारों का हल करने का यत्न करते हैं और सकारात्मक विचारों और व्यवहारों को विकसित करने का लक्ष्य अपने सम्मुख रखते हैं और तद्नुसार कार्य करते हैं।

'दैनिक जीवन में योग' पद्धति मानसिक कल्याण प्राप्त करने के लिए असंख्य विधियाँ प्रस्तुत करती है-मंत्र अभ्यास, नैतिक सिद्धान्तों का पालन, सत्संग करना, मन को शुद्ध और स्वतंत्र करने के लिए प्रेरक ग्रंथों का अध्ययन इत्यादि आत्मान्वेषण और आत्मज्ञान में एक महत्वपूर्ण उपकरण 'आत्ममनन ध्यान' आत्म विश्लेषण की चरणबद्ध तकनीक है । इस ध्यान-अभ्यास में हम अपने अवचेतन, हमारी इच्छाओं, जटिलताओं, आचरण के प्रकारों और पक्षविपक्ष के संपर्क में आते हैं। यह अभ्यास हमको अपनी प्रकृति तथा स्वभाव से परिचित करवा देता है। यह तकनीक हमको नकारात्मक गुणों और स्वभाव से दूर करने के योग्य बनाती है और जीवन में समस्याओं के बेहतर ढंग से प्रबंध करने में सहायता करती है।

सामाजिक स्वास्थ्य – सामाजिक स्वास्थ्य, स्वयं अपने अंदर ही खुश होने की और अन्य लोगों की खुशी बनाये रखने की योग्यता है। इसका अर्थ है, अन्य लोगों के साथ वास्तविक संपर्क व समाज में उत्तरदायित्व ग्रहण करना और समाज के हित के लिए कार्य करना। सामाजिक स्वास्थ्य का अर्थ जीवन में परम आनन्द एवं तनावहीनता का अनुभव करना।

युग की बढ़ती हुई समस्याओं में मादक (नशीले) पदार्थों का सेवन प्रमुख है। यह सामाजिक बीमारी का एक स्पष्ट लक्षण है। 'दैनिक जीवन में योग' की पद्धति इस रोग का शमन या निरोध करने में सहायक हो सकती है और जनता को एक नया, सार्थक उद्देश्य और जीवन में प्रयोजन प्रदान कर सकती है। एक अच्छे, सकारात्मक सत्संग का हमारे मानस पर महान् सत्प्रभाव पड़ता है। क्योंकि ऐसा साहचर्य हमारा व्यक्तित्व और चरित्र को ढालता है। सत्संग आध्यात्मिक विकास के क्षेत्र में अति महत्व रखता है।

दैनिक जीवन में योग पद्धति में जीवन बिताने का अर्थ अपने स्वयं के लिए और लोगों के लिए कार्य करना है। इसका अर्थ अपने पड़ोसियों के लिए और समाज के लिए मूल्यवान् और रचनात्मक कार्य करना, प्रकृति और पर्यावरण को बनाए रखना और विश्व में शांति के लिए कार्य करना है। योग का अभ्यास करने का अर्थ सार्थक सकारात्मक भावना में रहना और सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिए कार्य करने में सक्रिय रहना है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य आध्यात्मिक जीवन का मुख्य सिद्धांत और मानव जाति का नैतिक नियम है -

'अहिंसा परमो धर्मः' -किसी की हिंसा न करना प्रमुख सिद्धान्त है।

यह नैतिक नियम अहिंसा का सिद्धान्त है, जो विचारों, भावनाओं और कार्यों में सन्निहित है। प्रार्थना, ध्यान, मंत्र, सकारात्मक विचार और सहनशीलता आध्यात्मिक स्वास्थ्य उपलब्ध कराते हैं।

मानव को संरक्षक होना चाहिए, विध्वंसक या नाशक नहीं। जिन गुणों से हम वास्तव में मानव बनते हैं वे देने, समझने, और क्षमा करने की योग्यताएं हैं। जीवन के हर रूपों की वैयक्तिकता और स्वाधीनता का जीवन संरक्षण और सम्मान, योग शिक्षाओं का प्रथम अभ्यास है। इस सिद्धान्त का अनुसरण करने से अत्यधिक सहनशीलता, समझ, पारस्परिक प्रेम, सहायता और दयाभाव विकसित होते हैं - न केवल कुछ व्यक्तियों में, अपितु सभी मानवों, राष्ट्रों, जातियों और धार्मिक विश्वासों एवं मत-मतांतरों के मध्य भी।

'दैनिक जीवन में योग' का मूल सिद्धान्त स्वतंत्रता है। योग एक धर्म नहीं है-यह आध्यात्मिकता और बुद्धिमत्ता का स्रोत तथा सभी धर्मों की जड़ है। योग धार्मिक सीमाओं के बंधनों को दूर करता है और एकता का मार्ग दिखाता है।

'दैनिक जीवन में योग' मंत्रयोग और क्रियायोग के माध्यम से जीवनपथ के लिए आध्यात्मिक अपेक्षित मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। धरती पर सर्वाधिक उच्च विकसित जीवनधारी होने के नाते मानव अपनी वास्तविक प्रकृति और आंतरिक स्व- ईश्वर की अनुभूति करने में सक्षम है।

योग का आध्यात्मिक लक्ष्य ईश्वर की अनुभूति, वैयिक्तकता एवं आत्मा का ईश्वर से मिलन है। यह अनुभूति कि सब अपने मूल रूप में एक ही है और ईश्वर से संबंध रखते हैं, पहला कदम है।

आपके अपने स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में, एक और स्वतंत्र, सुखी जीवन के बारे में निर्णय, आप ही के हाथों में है।दृढ़ निश्चय के साथ नियमित रूप से अभ्यास करें तो सफलता निश्चय ही प्राप्त होगी।

मैं सभी योगाभ्यासियों और भविष्य में योग करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक सुख, सफलता, स्वास्थ्य, जीवन में सुव्यवस्था और आनन्द की कामना करता हूँ तथा एतदर्थ ईश्वर की अनुकंपा चाहता हूँ।

प्राचीन भारत में वृष्टि और अनावृष्टि

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

भारत के कुछ भाग में सूखा अर्थात् दुर्भिक्ष या अनावृष्टि का प्रकोप प्राय: सदा रहता आया है। आए दिन ऐसे समाचार आते रहते हैं, कि उत्तर भारत का अमुक भाग अनावृष्टि के आतंक से त्राहि त्राहि कर रहा है। सावन सूखा गया, पछुआ हवाएँ मेघों का रास्ता रोके खड़ी हैं। बूंदों की आशाएँ धूमिल हो गईं। 'दो दिन में मानसून आएगा' की चातक-तृष्णा एक माह से रह रह कर आशा बँधाती हैं, पर न जाने किस अभिशाप ने मौसम-विज्ञानियों के सारे अंकगणित उलझा दिये, ज्योतिषियों और कर्मकांडियों की पवनधारणाएँ झुठला दीं, स्तुतियां बहरी हो गईं। आनन-फानन में समस्याओं के हल निकाल फेंकने वाले कम्प्यूटर मौन हैं। इस जनपीड़ा की करुणा में न जाने किन किन पंडितों द्वारा अखंड पाठ किये जाते हैं, इन्द्र को गुहार की जाती है, यज्ञ-दान किये जाते हैं, पूजा-जप किये जाते हैं। उनको प्रचार की वाँछा ने ऐसा करने की प्रेरणा दी हो, सो भी बात नहीं है। जनजीवन को अकाल की इस त्रासदी से किसी भी प्रकार मुक्ति दिलाने की बलवती इच्छा, जो बच्चे-बच्चे के हृदय में है, यह सब कुछ करवा रही है।

सरकार हो या एक अदना सा नागरिक, इस दारुण अग्निपीड़ा से देश को बचाने के प्रयत्न में कोई कसर नहीं छोड़ता, पर एक बूंद नहीं बरसती। विज्ञान कहता है समुद्र की सतह ही ठंडी नहीं हुई इस बार, तभी तो मौसम विज्ञान के आकलन भी विफल हो रहे हैं। कोई प्रदूषण को दोषी ठहराता है, कोई जंगलों के कटाव को। तब लगता है, क्या इस देश में इस पीढ़ी को ही इन्द्र का शाप है या पहले भी कभी ऐसा होता था? मानसून पहले नियमित आता था या अनिश्चित था और कभी भी रूठ जाता था? अथवा उसका जन्म इसी सदी में हुआ है? ज्यों-ज्यों इतिहास और पुराकथाओं के पृष्ठ पलटते हैं, लगता है अकाल, अनावृष्टि, प्रकृति की यह आँख मिचौनी और वृष्टि की अनिश्चितता इस देश को तो अनादिकाल से आतंकित करती रही है। इसके उपाय वह सदा

से खोजता रहा है। प्रत्येक युग में अचानक आये अकाल की गाथाएँ मिलती हैं। पुराणों में ऐसे भीषण अकालों की कथाएँ है जब खाने को कुछ नहीं मिला, पशुओं का मांस भी नहीं, क्योकि पशु भी मर गये थे। विश्वामित्र या वामदेव जैसे ऋषियों को भी कुत्ते का मांस या आँत खाकर प्राण धारण करना पड़ा था। बहुत से युग ऐसे बीते, जब किसान की आँखें आग उगलते आसमान को निहारते पथरा गईं।

कृषक बन्धु युग युग से तेरी यही कहानी।

अंबर में है आग और आंखों में पानी ॥

कम से कम तीन चार हजार वर्षों के लिखित इतिहास वाले इस कृषिप्रधान देश में ऐसी अनावृष्टि का काल कैसा होता होगा ? क्या करते होंगे लोग, कृषक, राज ऋषि ?

वेदकाल में –

वेदों से लेकर पुराणों तक तभी तो वृष्टि को वरदान और सूखे को अभिशाप कहा गया है। '**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, पर्जन्यः पिता स उनः पिपर्तु**' कह कर अथर्ववेद ने बताया, भूमि मेरी माँ है, मैं उसका पुत्र हूँ। पिता है मेरा पर्जन्य, जो जल बरसाकर हम सबको तृप्त करता है। तभी तो यह हुआ कि हर देवता से ऋषि प्रार्थना करता था कि जल बरसाओ। आज जिस इन्द्र देवता को गाँव का किसान वर्षा का एक मात्र देवता मानता है, वह मूलतः केवल वृष्टि का देवता नहीं था। वह राजा था, प्रशासक था, योद्धा था, महारथी था– पर वर्षा के प्रयत्नों में अग्रणी और सफल रहने से वह कैसे वर्षा का देवता बन गया, कोई नहीं जानता। कौन कौन वर्षा के देवता थे, उन्हें कैसे रिझाया जाता था ? इस बात के पूरे अभिलेख तो आज भी उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, किन्तु विद्वानों ने इस प्रकार के अध्ययन अवश्य दिये हैं कि, प्राचीन भारत में मौसम के पूर्वानुमान कैसे किये जाते थे, अनावृष्टि और बाढ़ का सामना कैसे किया जाता था। भारत के मौसमविज्ञान विभाग के सेवानिवृत्त उपनिदेशक डॉ. ए.एस. रामनाथन् ने जो वेदविज्ञान के भी मनीषी हैं, ऐसे अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। अन्य विद्वानों ने भी ऐसे अध्ययन किये हैं। जयपुर के मधुसूदन ओझा ने '**कादम्बिनी**' नामक ग्रंथ वृष्टिविज्ञान और वर्षा के पूर्वानुमानों पर लिखा था। लगता है वर्षा की अनिश्चितता से त्रस्त भारतीय मनीषा ने वर्षा की सही भविष्यवाणी का हर युग में भरपूर प्रयत्न किया। ज्योतिष की पवनधारणा इसी का प्रतीक है। इन्दौर के वीरसेन वेदश्रमी ने '**वैदिक वृष्टि विज्ञान**' ग्रंथमाला ही निकाल डाली। मोतीलाल शास्त्री ने भी अपने ग्रंथों में यत्र तत्र वृष्टिविद्या के संकेत किये हैं। मीमांसा शास्त्रियों ने तलाश की है, कि कौन–कौन से यज्ञ वृष्टि के लिए किये जाते थे।

वर्षा के देवता -

इस विषय में उल्लेखनीय है कि वेद के ऋषियों ने वर्षा के लिए जिम्मेदार देवता कौन-कौन से माने हैं। पर्जन्य तो वर्षा का ही देवता माना गया था, जो बादल बन कर बरसता है। समुद्र से पानी सोख कर अपनी किरणों के गर्भ में उसे लेने की क्रिया करने वाला देवता सूर्य था। अत: उसका भी हाथ वर्षा में माना जाता था। सोम देवता (तत्व) की भूमिका भी इसमें महत्वपूर्ण थी, किन्तु पर्जन्य के बाद सर्वाधिक उपयोगी और वर्षा का सीधा कारक माना गया था मरुत् नामक देवताओं को, जो हवाओं का ही नाम है। इनका समूह मरुद्गण कहा गया है। ये हवाएँ ही बरसात लाती हैं इसका बहुत स्पष्ट और विस्तृत विवरण वेदों में मिलता है। ऋग्वेद के अनेक सूक्त मरुतों के लिए हैं, जिनमें वृष्टिविद्या तो है ही बरसात के लिए। मरुतों से अद्भुत और उत्कृष्ट प्रार्थनाएं भी की गई हैं।

रमयत मरुतः श्येनमायिनं मनोजवसं वृषणं सुवृक्तम् ।
येन शर्ध उग्रमवसृष्टमेति, तदश्विना परिधत्तं स्वस्ति।

(कृष्णयजुर्वेद-2/4/7)

इसकी व्याख्या में प्रसिद्ध मीमांसक पं. पट्टाभिराम शास्त्री ने स्पष्ट किया है, कि किस प्रकार मरुतों के भेद प्राचीन ऋषियों ने बताये है। पश्चाद्वात (पछुआ हवा) को वृष्टि का अवरोधक मान कर उनके निवारण और पुरोवात (पुरवैया) के आमंत्रण की प्रक्रिया कारीरी इष्टि अर्थात् करीर (कैर, टैटी) की समिधा से किये जाने वाले यज्ञ के द्वारा पूरी की जाती थी। मरुतों की इस भूमिका के विवरण से लगता है कि मानसून के व्यवहार का गहरा अध्ययन उस समय भी किया गया था। वर्षा के अन्य देवता थे-द्यावा-पृथिवी, अश्विनौ आदि।

इन्द्र को मरुद्गणों का नेता मान लिया गया और धीरे-धीरे वह वर्षा का भी देवता बन गया। इन्द्र द्वारा वृत्रासुर के वध की कथा को भी आकाश में निश्चल हुए अप् (जल) तत्व को वज्र (बिजली) से तोड़ कर रोके हुए जल को बहा देने के प्रतीक के रूप में अनेक विद्वानों ने व्याख्यायित किया है। तभी से लोक-भावनाएँ इन्द्र देवता और बिजली रानी को बरसात से जोड़ बैठी। वैसे अनेक देवताओं की शक्तियों को वर्षा के लिए आमंत्रित किया जाता था। ताप का अध्ययन भी किया जाता था और अन्तरिक्ष की गतिविधियों का भी। इन्हें यज्ञ कहा जाता था। यों विज्ञान और धर्म साथ साथ चलते थे। विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाने की कथा को भी पर्जन्येष्टि का प्रतीक बताया गया है अर्थात् विश्वामित्र ने वह श्येन याग किया था, जिसमें कुत्ते की आँत की आहुति देने से वर्षा होने का फल बताया गया है।

पुराणों में-

पुराणों में तो ऐसी गाथाएँ सैकडों हैं, जिनमें बताया गया है कि किसी राजा के राज्य में जब भीषण अकाल पड़ गया तो उसने क्या क्या प्रयत्न किये। एक सर्वाधिक प्रसिद्ध गाथा यह है कि अयोध्या के राजा दशरथ के मित्र अंगराज (बिहार के किसी अंग नामक प्रदेश के राजा) लोमपाद के राज्य में अकाल पड़ने पर उसका एक मात्र उपाय यह बताया गया, कि यदि ऋषि-कुमार ऋष्यशृंग उनकी राजधानी में आ जाते हैं, तो उनके यज्ञ से वर्षा अवश्य होगी। ऋष्यशृंग नितांत एकांत-सेवी ब्रह्मचारी थे। उन्हें सुन्दरियों द्वारा भरमा कर राजधानी लाया गया और राजा लोमपाद ने अपनी कन्या शांता का विवाह उनसे करके उन्हें सम्मानित किया। तुरन्त भरपूर वर्षा हो गई। अकाल के समय गरीबों को अन्न बँटवाने तथा पेयजल और भोज्य पदार्थों की सुविधा प्रदान करने के प्रयत्नों का उल्लेख भी मिलता है। इसके बाद मध्यकाल और मुगलकाल में भयंकर अकालों की तवारीख तो जानी पहचानी है। ऐसे अवसरों पर राजाओं और सेठों द्वारा किये जाने वाले धर्मार्थ कार्यों और अकाल राहत कार्यों की जानकारी भी इतिहास से मिल सकती है।

सदा से यही रही है वर्षा और अकाल की लुकाछिपी से जूझते इस देश की नियति । इस अनिश्चितता ने उसे सदा आतंकित ही रखा है। जहाँ उसने इस अनिश्चय को तोड़ने और वर्षा ऋतु आने से पहले ही वर्ग विशेष में वर्षा की मात्रा कहाँ ,कब, कैसे होगी ? इसका आकलन पहले से कर पाने के भरसक प्रयत्न किये हैं, वहीं रूठे पर्जन्य को मनाने के भी हर संभव उपाय खोजे हैं। उन उपायों में कौन-कौन से आज भी कारगर हो सकते हैं ? यह तो तभी देखा जा सकेगा, जब उन उपायों की तलाश पूरी हो जाए।

शेषनाग एवं शेषशायी नारायण

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
विश्वगुरुदीप शोध संस्थान, जयपुर

हमारे ब्रह्माण्ड का मूल आधार शेषनाग है, जिसे भ्रमवश पृथ्वी का भी आधार कह दिया गया है। इस सन्दर्भ में ध्यातव्य है, कि पृथ्वी के सुदूर नीचे जिस पाताल लोक का अस्तित्व बतलाया गया है, वहाँ तक पृथ्वी की ही विद्यमानता है तथा पृथ्वी से सुदूर ऊपर जिस सत्यलोक का अस्तित्व बताया गया है, वहाँ तक आकाश की ही विद्यमानता है। अवशिष्ट पदार्थ को शेष कहते हैं। प्रलय होने पर जब सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् नष्ट हो जाता है, तो उसके जो सूक्ष्म परमाणु शेष बचते हैं, उनका संघात या समूह शेष कहा गया है। जैसा कि श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के तीसरे अध्याय में उल्लेख हुआ हैं-

''नष्टे लोके द्विपरार्द्धावसाने,
महाभूतेष्वादिभूतं गतेषु
व्यक्तेऽव्यक्तं कालवेगेन याते
भवानेकः शिष्यते शेषसंज्ञः।।''

चूँकि सृष्टि की कालावधि के बराबर ही प्रलय की कालावधि होती है, अतः बहुत लम्बे समय तक इस परमाणु संघात को संरक्षण प्रदान करने वाले तीन मुख्य तत्त्व होते हैंः-

1) अग्नि की संवर्तक नाम वाली रश्मियाँ
2) वायु की संकर्षण नाम वाली रश्मियाँ
3) सविता की अनन्त नाम वाली रश्मियाँ

तीनों प्रकार की रश्मियों का समूह परमाण्वीय विश्व का मूलाधार होता है। इन रश्मि के अधिष्ठातृ देवता जिनका अग्नि, वायु एवं सविता के नाम से उल्लेख किया गया है, ये अपनी रश्मियों के माध्यम से सदैव विद्यमान रहते हैं। ये शाश्वत हैं, अतएव भगवान् वेद का भी उद्घोष हैः-

''अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्''

इन तीनों सनातन ब्रह्मस्वरूपों से विनश्यद् अवस्था में भी अविनश्यद् रहने वाला शेष सनातन बना रहता है, अतः यह भी कहा गया है कि शेष स्वयं भगवान् ही है - **''शेषस्तु भगवान् स्वयम्।''**

उक्त तीनों प्रकार की रश्मियों से तीन तीन प्रकार की विशिष्ट रश्मियाँ आविर्भूत होकर प्रसृत होती हैं। अग्नि की संवर्तक नाम वाली रश्मियों से क्रमशः वसु, संख एवं करञ्जि नामक विशिष्ट रश्मियाँ आविर्भूत होती है। वायु की संकर्षण नाम वाली रश्मियों से 'राजिमती,' 'बिन्दुलेखा' एवं 'तक्षा' नामक विशिष्ट रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। सविता की अनन्त नाम वाली रश्मियों से 'पद्मा' 'पद्मका' एवं 'कुलिशा' नामक विशिष्ट रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। अग्नि की संवर्तक रश्मियों से उत्पन्न होने वाली 'वसु' संखा एवं 'करञ्जि' नामक रश्मियाँ पीत वर्णवाली होती हैं। वायु की संकर्षण रश्मियों से उत्पन्न होने वाली 'राजिमती' 'बिन्दुलेखा' एवं 'तक्षा' नामक रश्मियाँ नील वर्णवाली होती हैं। सविता की अनन्त नामक रश्मियों से उत्पन्न होने वाली 'पद्मा' 'पद्मका' एवं 'कुलिशा' नामक रश्मियाँ लाल वर्ण वाली होती हैं।

वसुनामक रश्मियों का संघात वासुकि कहलाता है। संखा नामक रश्मियों के संघात का नाम 'शंखपाल' है। 'करञ्जि' नामक रश्मियों का संघात 'कर्कोटक' कहलाता है। राजिमती नाम रश्मियों का संघात 'राजिल' कहलाता है। 'बिन्दुलेखा' नामक रश्मियों का संघात 'चित्राङ्ग' कहलाता है। 'तक्षा' नामक रश्मियों का संघात 'तक्षक' कहा जाता है। 'पद्मा' नामक रश्मियों का संघात 'महापद्म' तथा 'पद्मक' नामक रश्मियों का संघात ही 'पद्म' कहा जाता है। 'कुलिशा' नामक रश्मियों का संघात 'कुलिक' कहा जाता है। ये नौ प्रकार की विशिष्ट रश्मियों के संघात 'नाग' संज्ञा द्वारा अभिहित किये गये हैं।

'नाग' का अर्थ सर्प नहीं है, किन्तु भ्रमवश सर्प अर्थ कर दिया गया है। वस्तुतः इन रश्मिसंघातों की स्थिति सुमेरु के नीचे के भाग से प्रारम्भ हो कर ब्रह्माण्ड के नीचे के भाग से होते हुए कुमेरु तक होती है। सुमेरु एवं कुमेरु ये दोनों कुल पर्वत हैं तथा पर्वत को 'नग' कहा जाता है। एक नग (पर्वत) से दूसरे नग (पर्वत) तक अवस्थित होने से इन्हें 'नाग' कहा गया है। इन दोनो पर्वतों के तलीय क्षेत्रों का मध्य भाग ही इनका विचरणक्षेत्र है, जहाँ ये रश्मियाँ मण्डलाकार भ्रमण करती हैं। अतः जैसे नग (पर्वत) में विचरण करने वाले हाथी को 'नाग' कहते हैं, वैसे ही इन्हें भी 'नाग' कहा गया है। बृहन्नारायणीय तन्त्र के टीकाकार ने यह भी बतलाया है, कि ये रश्मियाँ ब्रह्माण्ड के भीतर प्रवेश नहीं करतीं इस कारण भी इन्हें नाग कहा गया है।

ये नौ नाग ही अधिवेश माने गये हैं, क्योंकि इनसे भी अन्य विभिन्न प्रकार की रश्मियाँ उत्पन्न होती हैं, जो इन्हीं को अच्छादित किये रहती हैं। वासुकि एवं शंखपाल से सात-सात सौ प्रकार की रश्मियाँ अविर्भूत होती हैं। कर्कोटक से तीन सौ प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। राजिल से रश्मियाँ आविर्भूत नहीं होतीं, किन्तु रश्मियों का सांकर्य इससे सम्भव होता है। चित्राङ्ग से हजार प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। तक्षक से पाँच सौ प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। महापद्म से भी पाँच सौ प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। पद्म से तीन सौ प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं तथा

इसी प्रकार कुलिक से भी हजार प्रकार की रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं। इन रश्मियों को 'फणों' की संज्ञा दे दी गयीं, जिससे भी सर्प होने की भ्रान्ति उत्पन्न हुई है। शारदातिलक में इनका वर्णन निम्नानुसार प्राप्त होता है:-

''अनन्तकुलिकौ विप्रौ वह्निवर्णावुदाहृतौ।
प्रत्येकं तु सहस्त्रेण फणानां समलंकृतौ।।
वासुकिः शंखपालश्च क्षत्रियौ पीतवर्णकौ।
प्रत्येकं तु फणासप्तशत संख्याविराजितौ।।
तक्षकश्च महापद्मो वैश्यावेतावही स्मृतौ।
नीलवर्णौ फणापञ्चशतौ तुङ्गोत्तमाङ्गकौ।।
पद्मकर्कोटकौ शूद्रौ फणात्रिशतकौ सितौ।''

उपर्युक्त उल्लेख में यद्यपि कतिपय भिन्नतायें भी कही गयी हैं, किन्तु उनका निराकरण ज्योतिषशास्त्र से भली भाँति हो जाता है, अतः उक्त विषय में अधिक शंका समाधान की आवश्यकता नहीं है। ये नौ नाग काल के ही अंश हैं यह भी ज्योतिषशास्त्र बतलाता है। वहाँ 'कुलिक' को विशेष महत्त्व दिया गया है तथा इन्हें ही 'राहुकाल' भी कहा गया है, जो इनके दैनिक प्रभाव को लक्षित करता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है, कि शेष ही काल है, जो शाश्वत है। सूर्य की भाँति यह स्वयं रश्मिपुंज है, किन्तु इसमें प्रकाश की अपेक्षा 'तमस्' का बाहुल्य है, अतः इसे भगवान् विष्णु का तमोमय विग्रह भी कहा गया है।

पातालानामधश्चास्ते विष्णोर्या तामसी तनुः।
शेषाख्या यद्गुणान् वक्तुं न शक्ता दैत्यदानवाः।।
कल्पान्ते यस्य वक्त्रेभ्यो विषानलाशिखोज्ज्वलः।
संकर्षणात्मको रुद्रो निष्क्रम्यात्ति जगत्त्रयम्।।

शेष में तमोबाहुल्य का एक और भी कारण है और वह है सविता से ब्रह्माण्ड को प्राप्त होने वाली 'काश्य' नाम रश्मियाँ, जो ब्रह्माण्ड के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव से नीचे की ओर पर्याप्त मात्रा में प्रसृत रहती हैं तथा पृथ्वी के सतही भागों की सुदृढता को बनाये रखती हैं। पृथ्वी निरन्तर इन 'काश्य' रश्मियों का पान करने के कारण 'काश्यपी' कही जाती है। अमरकोशकार ने पृथ्वी के पर्यायों में इसका स्पष्ट उल्लेख किया है-

'क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः'

काश्यपी कहने से कश्यप की पुत्री होने का भी भ्रम हो जाता है, किन्तु पृथ्वी कश्यप की पुत्री नहीं है। 'काश्य' रश्मियाँ तमस् की सत्ता को बनाये रखने में पर्याप्त सहायक होती हैं। सूर्य से प्राप्त 'श्यावा' नामक अन्य रश्मियों का

सहयोग भी इन्हें प्राप्त होता है, अतः ब्रह्माण्ड के बाहरी भाग में तमस् का प्राबल्य हो जाता है तथा शेष नामक रश्मिसमूह उसमें ही अनुप्रविष्ट हो कर अपनी सत्ता को बनाये रखता है। ब्रह्माण्ड के उत्तरी ध्रुव पर शेष का जो अन्तिम सिरा है, उसे पुच्छ कहा गया है तथा दक्षिणी ध्रुव वाला जो सिरा है, वह इस शेष का मुख कहा गया है। शेष के इस पुच्छ भाग से ही तारामण्डल का प्रारम्भ होता है। इसके ऊपर 'शिशुमार' (ताराओं का एक विशेष समूह जिसकी आकृति गिरगिट जैसी है।) अवस्थित है जो सभी तारासमूहो में शिरोमणि कहा गया है। इस शिशुमार का पुच्छ भाग भी ब्रह्माण्ड के उत्तरी ध्रुव से सटा हुआ है। यह शिशुमार सूर्य के केन्द्र में विद्यमान 'विष्णु' की रश्मियों को अत्यधिक मात्रा में ग्रहण करता है तथा उसी से प्रकाशित होता है। इसे भगवान् विष्णु का तारकामय विग्रह कहा गया है, जैसा कि विष्णुपुराण में उल्लेख है-

''तारामयं भगवतः शिशुमाराकृतिः प्रभो।
दिवि रूपं हरेर्यत्तु तस्य पुच्छे स्थितो ध्रुवः।।
आधारभूतः सवितुर्ध्रुवो मुनिवरोत्तम।
ध्रुवस्य शिशुमारोऽसौ सोऽपि नारायणात्मकः।।
हृदि नारायणस्तस्य शिशुमारस्य संस्थितः।
बिभर्त्ता सर्वभूतानामादिभूतः सनातनः।।''

विष्णु के तारकामय विग्रह के रूप में उपलक्ष्यमाण शिशुमार ब्रह्माण्ड के मध्य भाग में ध्रुव के ऊपरी भाग से लेकर सूर्य की दिशा में दक्षिणी ध्रुव की ओर विस्तृत है। इसे ही शेषशायी विष्णु कहा गया है। चूँकि शिशुमार के नीचे नीचे ही 'पर्जन्य' की विद्यमानता होती है। इस पर्जन्य में ही 'नार' (वृष्टिजल) की उत्पत्ति सम्भव होती है, क्योंकि पर्जन्य में ही जलीय परमाणु सर्वाधिक मात्रा में विद्यमान होते हैं, जो 'नार' संज्ञा से अभिहित किये गये हैं। ये नार ही उस शिशुमार (तारकामय विष्णु) के आश्रय हैं, अतः उस शिशुमार की ही 'नारायण' यह अन्य संज्ञा भी विष्णु के पर्याय रूप में ग्रहण की गयी है।

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणःस्मृतः ।।

शिशुमार का केन्द्र भाग ही उन तारकामय विष्णु की 'नाभि' है तथा यहाँ से ही 'स्कम्भ' (ग्रहावस्थीय रेखा) का आरम्भ होता है। 'स्कम्भ' ही कमलनाल के रूप में वर्णित किया गया है। इस 'स्कम्भ' का अन्तिम छोर 'सविता' (तपोलोक में अवस्थित द्वितीय सूर्य) तक गया हुआ है। वे 'सविता' ही प्रजापति के अन्यतर रूप हैं, जिन्हें ब्रह्मा के नाम से पुकारा जाता है। 'सविता' के ऊर्ध्वभाग से जो रश्मियाँ आविर्भूत होती हैं, वे स्वरूपतः वायवीय होने से अदृश्य होती हैं किन्तु अतुलनीय प्रभावयुक्त होती हैं, इनका संघात 'रुद्र' कहा गया है। यह रुद्र ही शिव है। इस प्रकार ब्रह्मा एवं शिव भी इन नारायण के ही आश्रय हैं तथा नारायण का आश्रय शेष है।

श्रीमद् दादू दर्शन (जीवब्रह्मविचार:)

डॉ. दयाराम स्वामी
वरिष्ठ मनोरोग विशेषज्ञ
सदस्य - संचालन समिति, श्री दादू महाविद्यालय, जयपुर

महात्मा दादू मायातीतस्य निर्गुणस्य निरंजनस्य रामस्योपासको न तु मायाशबलितस्य सगुणस्य रामस्य। स स्वकीये दादूवाणीनामके ग्रन्थे स्पष्टमाह तत्। तद्यथा -

'मायारूपी राम को सब कोई ध्यावै ।
अलख आदि अनादि है सो दादू गावै ।।'

अर्थात् - 'मायाशबलितं रामं ध्यायन्ति सकला जनाः। अलक्ष्योऽनादिरादिर्यो दादू गायति तं प्रभुम्।' अत एव मंगलपद्येऽपि श्री दादू निरञ्जनं रामं ब्रह्मापरपर्यायं नमस्करोति 'दादू नमो नमो निरञ्जनम् इति कथयन्। अन्यत्रापि बहुत्र पदभागे एतादृशमेव तत्त्वमाराध्यत्वेन प्रतिपादयति। तद्यथा-

''ऐसा तत्त्व अनूपम भाई । मरै न जीवै काल न खाई ।।
पावक जरै न मारा मरई । काटा कटै न टारा टरई ।। 1।।
अक्खर खिरै न लागै काई । शीत घाम जल डूब न जाई ।। 2।।
माटी मिटै न गगन बिलाई । अघट एकरस रह्या समाई ।।3।।
ऐसा तत्त्व अनूपम कहिए । सो गहि दादू काहू न रहिए ।।4।।''

ब्रह्माभिन्नस्य निरञ्जनस्य रामस्यैतादृशमेव रूपं वेदान्तेष्वपि प्रतिपादितम्। यथा - 'यत्तद्देश्यमग्राममगोत्रमवर्णमचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम्' इत्यादि। अपि च, ।

'न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।'

(कठोपनिषद्)

एषो नित्यो महिमा ब्रह्मणोऽस्य न कर्मणा वर्धते न कनीयान् ।
तस्यैव स्यात्पदविज्ञं विदित्वा न कर्मणा लिप्यते पापकेन ।।'

(बृहदारण्यक)

भगवद्गीतायामपि -

''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ।।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।'

प्रेम की भावदशा

संजीव कुमार माथुर

एक छोटी-सी कहानी मुझे याद आती है। एक भिक्षुणी थी--बौद्ध भिक्षुणी। उसके पास एक छोटी-सी बुद्ध की चंदन की प्रतिमा थी। वह अपने बुद्ध को सदा अपने साथ रखती थी। भिक्षुणी थी, मंदिरों में, विहारों में ठहरती थी, लेकिन पूजा अपने ही बुद्ध की करती थी। एक बार वह उस मंदिर में ठहरी जो हजार बुद्धों का मंदिर है, जहां हजार बुद्ध-प्रतिमाएं हैं, जहां मंदिर के कोने-कोने में प्रतिमाएं-ही-प्रतिमाएं हैं। वह सुबह अपने बुद्ध को रख कर पूजा करने बैठी, उसने धूप जलाई। अब धूप तो कोई आदमी के नियम मानती नहीं ! उलटा ही हो गया। हवा के झोंके ऐसे थे कि उसके छोटे-से बुद्ध की नाक तक तो धूप की सुगंध न पहुंचे और पास जो बड़ी-बड़ी बुद्ध की प्रतिमाएं बैठी थीं, उन तक सुगंध पहुंचने लगी। वह तो बहुत चिंतित हुई। ऐसा नहीं चल सकता है। तो उसने एक छोटी-सी टीन की पोंगरी बनाई और अपने धूप पर ढाँकी और अपने छोटे-से बुद्ध की नाक के पास चिमनी का द्वार खोल दिया, ताकि धूप की सुगंध अपने ही बुद्ध को मिले। सुगंध तो मिल गई अपने बुद्ध को, लेकिन बुद्ध का मुंह काला हो गया। वह बड़ी मुश्किल में पड़ी, चंदन की प्रतिमा थी, वह सब खराब हो गई। उसने जाकर मंदिर के पुजारी को कहा कि मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गयी हूं। मेरे बुद्ध की प्रतिमा खराब हो गई, कुरूप हो गई, अब मैं क्या करूं? तो उस पुजारी ने कहा कि जब भी कोई उन सत्यों को जो सब तरफ फैलते हैं, एक दिशा में बांधता है, तब ऐसी ही दुर्घटना और ऐसी ही कुरूपता हो जाती है।

प्रेम को मनुष्य-जाति ने अब तक संबंध की तरह सोचा है, 'रिलेशनशिप' की तरह। दो व्यक्तियों के बीच संबंध की तरह। प्रेम को हमने अब तक 'स्टेट आफ माइंड' की तरह नहीं समझा, कि एक व्यक्ति की भावदशा प्रेम की है। यदि मैं प्रेमपूर्ण हूं, तो एक के प्रति ही प्रेमपूर्ण नहीं हो सकता हूँ। प्रेमपूर्ण होना मेरा स्वभाव हो जाएगा। मैं अनेक के प्रति प्रेमपूर्ण हो जाऊंगा--एक-अनेक का सवाल ही नहीं रह जाता, मैं प्रेमपूर्ण हो जाऊंगा। अगर मैं एक के प्रति ही प्रेमपूर्ण हूं और शेष के प्रति प्रेमपूर्ण नहीं हूं, तो मैं एक के प्रति भी प्रेमपूर्ण नहीं रह पाऊंगा। तेईस घंटे मुझे अप्रेम में जीना प ता है-दूसरों के साथ होता हूँ, एक घंटा जिससे प्रेम करता हूं उसके साथ होता हूं। तेईस घंटे अप्रेम का अभ्यास चलता है, एक घंटे में टूटता नहीं फिर। फिर एक घंटे में, जिसे हम प्रेम कहते हैं वह भी प्रेम नहीं हो पाता, अप्रेम ही हो जाता है। लेकिन समस्त जगत के प्रेमी, नासमझ ही कहना चाहिए, उन्हें प्रेम का कोई पता नहीं, प्रेम को बांध लेना चाहेंगे। और जैसे ही हम प्रेम को बांधते हैं, प्रेम हवाओं की तरह है, मुट्ठी जोर से बांधी तो हवा मुट्ठी में नहीं रह जाती, मुट्ठी खुली हो तो ही रहती है। जोर से बांधी तो हवा बाहर हो जाती है। खुली मुट्ठी में नहीं होती है। प्रेम को बांधने की चेष्टा में ही प्रेम मरता है और सड़ जाता है। हम सबने अपने प्रेम को मार डाला है और सड़ा लिया है--उसे बांधने की चेष्टा में।

हिन्दी सिनेमा और गांधी

डॉ. वत्सला
सह-आचार्य (संस्कृत)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़

सिनेमा समाज में प्रयुक्त बहुप्रचलित शब्द है। सिनेमा का अर्थ होता है - चलचित्र, सिनेकला, सिनेमाघर, सिनेमाहाल, फिल्म। अंग्रेजी में इसे मूवी और पिक्चर कहते हैं। कुछ लोग सिनेमा को कल्पनालोक कहते हैं किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। जैसे लोक का अनुकीर्तन काव्य, नाटकादि सभी विद्याओं में होता है, वैसे ही लोक का अनुकरण (लोक का प्रतिबिम्ब) फिल्मों में भी देखने को मिलता है। फिल्मों में भी लोक में परिव्याप्त समस्याओं, विसंगतियों, विषमताओं का फिल्मांकन बेहतरीन तरीके से किया जाता है। समाज में प्रसृत प्रवृत्तियाँ का प्रभाव साहित्य की तरह फिल्मों में भी परिलक्षित होता है।

साहित्य की तरह सिनेमा से भी रसानुभूति (आनन्द) की प्राप्ति होती है। इसका अनुमान सिनेमाघरों से निकलने वाली फिल्मों की भीड़ को देख कर लगाया जा सकता है। सिनेमा नाटक की तरह दृश्य होता है। कालिदास ने भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए नाटक को एक सामान्य मनोरंजन का साधन बताया हैः- 'नाटयं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्' इसी प्रकार सिनेमा भी भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए मनोरंजन का साधन है। फिल्मों से नाटक की भाँति दर्शकों को रसानुभूति (आनन्दानुभूति) की प्राप्ति होती है। लोक की अभिरुचि के अनुसार ही निर्माता, निर्देशक कहानी का चयन कर फिल्म का निर्माण करते हैं। इस तरह सिनेमा, साहित्य और समाज का आपस में अन्तःसम्बन्ध है।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में जब मनोरंजन के अन्य साधन नहीं थे, तो फिल्में ही मनोरंजन का सर्वसुलभ माध्यम थीं। सिनेमाघरों में लगने वाली पिक्चरों का प्रसार रेडियो, समाचारपत्रों, रिक्शा के पीछे पोस्टर लगा करके तथा माइक से प्रचारित करके, ट्राली पर पोस्टर चिपका कर अथवा व्यक्ति के द्वारा गली - मोहल्ले व सड़कों पर घूम-घूम कर आगामी पिक्चरों तथा सिनेमाघरों में लगने वाली पिक्चर का प्रचार-प्रसार किया जाता था। पिक्चर हाल में लगने वाली नयी पिक्चर के आरम्भ में आगामी पिक्चरों के ट्रेलर दिखाये जाते थे जिससे नयी पिक्करों की कहानी तथा पात्रों

(हीरो-हीरोइन) के विषय में जानकारी मिलती थी। यदि पिक्चर देखने जाना है और पिक्चर हाल में क्या पिक्चर लगी है। अभी वही पिक्चर लगी है या बदल गयी। इसे जानने का स्रोत समाचार पत्र थे।

एक जमाने में बहुत से परिवारों में फिल्मों को देखना अच्छा नहीं माना जाता था और न पिक्चर देखने की अनुमति दी जाती थी। लोग चोरी से पिक्चर देखने जाते थे, जिससे घरवालों को ज्ञात न हो सके कि उनके घर के सदस्य पिक्चर देखने गये हैं। लेकिन कुछ परिवारों में लोगों को पिक्चर देखने की अनुमति थी। वे लोग पिक्चर देखने जाते थे और फिल्म को देखने के उपरान्त वे लोगों को फिल्म की कहानी सुनाते थे।

फिल्मों को देखने का जैसा इतिहास है वैसे ही फिल्मों के निर्माण का इतिहास भी दीर्घकालिक है। भारतीय सिनेमा का इतिहास बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से शुरू हुआ है। पहले फिल्मों की कहानियाँ केवल धार्मिक, पौराणिक व ऐतिहासिक होती थी। पहली मूक फिल्म 1913 में राजा हरिशचन्द्र बनी थी। इसे पश्चात् बीसवी शताब्दी (1920) में फिल्म निर्माण करने वाली कई कम्पनियाँ आयीं और 1931 में पहली बार ध्वनिसहित फिल्म, जिसे बोलती फिल्म कहा गया,

बनी 'आलमआरा'। इसके पश्चात् फिल्म जगत् में क्रान्तिकारी परिवर्तन का दौर आया। फिल्म क्षेत्र का विस्तार हुआ। विभिन्न भाषाओं यथा बंगला, मराठी, तमिल, तेलगु आदि में फिल्में बनने लगीं। बींसवी शताब्दी के मध्य से फिल्मों की पटकथा में भी परिवर्तन हुआ। देशभक्ति और सामाजिक समस्याओं व सन्देशों को देने वाली फिल्में बनने लगीं। यथा- वेश्यावृत्ति, दहेजप्रथा, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, निःसन्तान, सन्तान प्राप्ति, बहुविवाह, ऊँच-नीच, छुआ-छुत, सम्पत्ति अधिग्रहण, गरीबी, समाज में व्याप्त अमीरी-गरीबी की खाई, परिवार नियोजन, अशिक्षा, विवाहेतर सम्बन्ध, घर से पलायन, पूर्व प्रेम सम्बन्ध आदि पर आघृत कहानियों पर फिल्में बनने लगीं और लोगों द्वारा सराही गयीं। 1950 से 1960 तक का काल भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्णकाल माना जाता है। इस समय में बनी फिल्में समाज के लिए बड़ी प्रेरणादायी रहीं।

20 वीं शताब्दी में जब पूरे देश में स्वतन्त्रता आन्दोलन की लहर फैली थी, तो इस आन्दोलन का प्रभाव भी फिल्मों पर पड़ा। परिणामस्वरूप देशभक्ति पर केन्द्रित फिल्में बनीं, जो जन समुदाय की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए प्रेरित करने वाली थीं। ऐसी फिल्में लोगों द्वारा बहुत पसन्द की गयी। कुछ सुप्रसिद्ध फिल्मों के नाम इस प्रकार हैं - 1952 में आनन्दमठ बनी जो बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास पर आधारित थी। 1943 किस्मत - यह फिल्म द्वितीय

विश्व युद्ध की कथा पर आधृत थी। 1948 - शहीद, 1953 - झाँसी का रानी, 1965 - शहीद, 1964 - हकीकत - यह फिल्म 1962 में हुए भारत चीन युद्ध पर बनी थी। 1957 - मदर इंडिया आदि।

भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भी नामचीन स्वतन्त्रता सेनानियों, महापुरूषों के चरित्रों तथा स्वतन्त्रता के संघर्ष की घटनाओं पर फिल्मों का निर्माण हुआ । जो लोगों द्वारा बहुत पसन्द की गयी। कतिपय नामावलियाँ अवलोकनीय हैः- उपकार, पूरब और पश्चिम, गरम हवा, आक्रमण, सत्यमेव जयते, द लेंजेड आफ भगतसिंह 2002, मंगलपांडे 2005, द राइजिंग, रंग दे बसन्ती 2006, गांधी - 1982, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस - द फारगाटन हीरो 2004, सरदार - 1993, बार्डर - 1997, मा तुझे सलाम 2002, सरफरोश, लगान, गदर-एक प्रेम कथा, 1971 (2007), लक्ष्य - 2004, उरी द सर्जिकल स्ट्राइक 2019 आदि अनेकानेक फिल्में बनी और बन रही है।

इस प्रकार हम देखते है कि फिल्मों का समाज व देश की गतिविधियों से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। फिल्मकारों ने समाज में व्याप्त प्रवृत्तियों का बड़ी परिपक्वता से फिल्मों में चित्रांकन व प्रस्तुतीकरण किया है। यही कारण है कि गांधी जी को ले कर स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक थे। सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें 'बापू' तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हे 'महात्मा' की उपाधि दी थी। पूरा देश उन्हें राष्ट्रपिता कहता था। गांधी जी स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय अपनाए गए सत्य, अहिंसा व शान्ति के सिद्धान्तो से भारतीय इतिहास में अजर-अमर है। यद्यपि सत्य, अहिंसा व शान्ति के सिद्धान्त हमारे धर्मग्रन्थों में सदियों से वर्तमान थे, किन्तु गांधी जी ने इन्हें अपने जीवन में केवल सैद्धान्तिक रूप से नहीं अपितु प्रायोगिक रूप से ग्रहण किया। इसीलिए विश्व के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अकिंत हो गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने दो अक्टूबर को 2007 में 'अहिंसा दिवस' मनाया जाता है। गांधी जी ने सत्य, अंहिसा व शान्ति के जो प्रयोग किए, उसे अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में लिखा। उनकी आत्मकथा ने फिल्मजगत् को प्रभावित किया और फिल्मों का निर्माण हुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन के आरम्भ में गांधी जी का योगदान अविस्मरणीय था किन्तु बाद में नाना कुचक्रों के कारण वे अपने आदर्श से भटक गये (विचलित) हो गये, ऐसा कहा जा सकता है। यद्यपि गांधी जी के जीवन एवं कृत्यों को लेकर कई फिल्में बनीं, किन्तु गांधी जी ने अपने जीवन में दो ही फिल्में देखी थीः- 1 .रामराज्य, 2-मिशन टु मास्को। गांधी जी पर फिल्म बनने का सिलसिला जो स्वतन्त्रता आंदोलन के समय से आरम्भ हुआ वह अब तक प्रवाहमान है। 'गांधी चरित्र' पर बनी फिल्मों का विवरण इस प्रकार हैः-

1. जागृति (1954) -

इसके निर्माता शशधर मुखर्जी और निर्देशक सत्येन बोस थे। इसके गीतों को कवि प्रदीप ने लिखा था । इस फिल्म का सुप्रसिद्ध गाना है- दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट फिल्म थी। इसके अन्य गाने हैं- आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की, हम लाये हैं तूफान से किश्ती निकाल के।

2. बापू ने कहा था (1962) -

यह फिल्म बाल चित्र समिति की भेंट थी। इसके निर्माता महेन्द्रनाथ थे और निर्देशन विजय भट्ट का था। गीतकार भरत व्यास थे। फिल्म ब्लैक एण्ड व्हाइट थी। अभिनेता नाना पलसीकर थे। इस फिल्म में एक छोटा बालक किस प्रकार बापू के आदर्शो से प्रभावित होता है और वह बापू के आदर्श को अपने गाँव में लोगों को सिखाता है।

3. महात्मा - लाइफ आफ गांधी - 1869 - 1948 -

इस फिल्म में 1869 से 1948 तक गांधी जी की लाइफ और भारत की आजादी के लिए उनके संघर्ष को दिखाया गया है। इस फिल्म को अंग्रेजी भाषा में बनाया गया था। इस फिल्म का निर्देशन विशुभाई झवेरी ने किया था। वह फिल्म ब्लैक एण्ड व्हाइट थी। इसे लोगो ने खूब पसन्द किया था। फिर इस फिल्म को हिन्दी में भी तैयार किया गया । यह फिल्म गांधी नेशनल मेमोरियल फंड तथा भारत सरकार के फिल्म डिवीजन द्वारा बनायी गयी थी।

4. गांधी (1982) -

इस फिल्म में गांधी की भूमिका को वेस्टर्न ऐक्टर बेन किंग्सले ने निभाया था। इसमें अमरीशपुरी, ओमपुरी, रोहिणी, हृदंगणी और रजत कपूर जैसे कलाकार थे। इस फिल्म को आठ ऑस्कर अर्वाड्स मिले थे ऑस्कर के साथ ही वापय, गैमी, गोल्डन ग्लोव और गोल्डन गिल्ड समेत 26 अवार्ड प्राप्त हुए थे। यह फिल्म पूरे भारत में टैक्स फ्री थी। इस फिल्म को बहुत लोकप्रियता मिली थी।

5. सरदार (1993)

यह फिल्म केतन मेहता द्वारा निर्देशित थी। फिल्म में अन्नू कपूर ने महात्मा गांधी का किरदार निभाया था। गांधी और सरदार पटेल के विचारों में पार्थक्य को दर्शा कर उनके राष्ट्रिय लक्ष्यों को प्रस्तुत किया है। यह फिल्म उन महापुरुषो के रिश्तों को समझने का अवसर देती है। सरदार पटेल का चरित्र परेश रावल ने निभाया था।

6. मेकिंग आफ महात्मा -

1996 इस फिल्म का निर्देशन श्याम बेनेगल ने किया था। इसमें गांधी की भूमिका रजत कपूर ने निभायी थी। इसमें मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा बनने की कहानी को विस्तार से दिखाया गया है। ब्रिटेन ओर अफ्रीका में रहने के दौरान गांधी जी ने क्या देखा और उससे उनके जीवन में क्या कुछ बदलाव हुआ इस पूरी यात्रा को काफी प्रभावी ढंग से इस फिल्म में दिखाया गया है।

7. हे राम – 2000

इस फिल्म को दक्षिण भारतीय कलाकार कमल हसन ने बनाया है। इसकी कहानी भी उन्होंने लिखी, उन्हीं के निर्देशन में यह फिल्म बनी। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह ने गांधी का किरदार निभाया है। इसमें विभाजन के बाद फैली अशान्ति और गांधी जी की हत्या के बीच की कहानी दिखायी गयी है। फिल्म में शाहरुख खान, रानी मुखर्जी, गिरीश कर्नाड, ओमपुरी जैसे कलाकारों ने भी अपनी भूमिका निभायी है।

8. मैंने गांधी को नहीं मारा – 2005

यह फिल्म जान्हू बरुआ के निर्देशन में बनी है। इस फिल्म के कलाकार अनुपम खेर, उर्मिला मातोंडर, रजत कपूर, वमन ईरानी, वहीदा रहमान, प्रेम चोपड़ा थे। फिल्म में अनुपम खेर ने उत्तम चौधरी की भूमिका निभायी, जो यह स्वीकार करता है कि उसने ही गांधी की हत्या की है। उसके बाद उनकी बेटी उर्मिला मार्तोंडर यह पता लगाने की कोशिश करती है, कि क्या सच में उसके पिता ने गांधी की हत्या की है या कुछ और बात है।

9. लगे रहो मुन्नाभाई – 2006

यह फिल्म राजकुमार हिरानी के निर्देशन में बनी है। इस फिल्म में मुख्य भूमिका संजय दत्त की रही। इसके अलावा इसमें अरशद वारसी व वमन ईरानी ने काम किया था। यह फिल्म न केवल गांधी जी के ऊपर बनी थीं, बल्कि इसमें उनकी शिक्षाओं पर भी प्रकाश डाला गया था। इसमें दिखाया गया है कि आज के जमाने में भी गांधी प्रासंगिक क्यों है, गांधी जी की विचारधारा को काफी अलग तरीके से प्रस्तुत किया गया था। इस पिक्चर में बड़े ही मनोरंजक दंग से गांधी जी के किरदार को बड़े पर्दे पर उतारा है। फिल्म में संजय दत्त उर्फ मुन्ना भाई गांधी जी की विचारधारा पर चलते हैं। इस फिल्म में आज के युग में गांधीगिरी को भी प्रचलित किया है। यह फिल्म हास्य व्यङ्ग्य से परिपूर्ण थी। इस फिल्म को लोगों ने खूब पसन्द किया था। यूनाइटेड स्टेट नेशन में दिखायी जाने वाली यह पहली हिन्दी फिल्म थी।

10. गांधी माई फादर – 2007

यह फिल्म फिरोज अब्बास मस्तान के निर्देशन में बनी थी। यह फिल्म महात्मा गांधी और उनके बेटे हरिलाल के रिश्तों पर बनी थी। गांधी का किरदार दर्शन जरीवाला ने निभाया था। बेटे की भूमिका (चरित्र) को अक्षय कुमार ने निभाया है। फिल्म में यह दिखाया गया है कि हरिलाल को लगता है कि देश के पिता होने के बावजूद महात्मा गांधी उनके लिए एक अच्छे पिता होने में असफल रहे। इस फिल्म को नेशनल अवार्ड मिला था।

11. गांधी द कान्सपिरेंसी

अल्जीरियन निर्देशन करीम ट्राडिया निर्देशित इस फिल्म में हालिवुड कलाकारों के साथ ही ओमपुरी, रजत कपूर बालीवुड के किरदारों ने अहम् किरदार निभाए है। यह फिल्म भारत विभाजन के बाद से गांधी जी की हत्या तक के घटनाक्रम पर आधारित है। इस फिल्म में गांधी का किरदार एक्टर, प्रोडयूसर और राइटर Jesus Sans ने निभाया था। सन् 2018 में यह फिल्म प्रसारित की गयी थी।

उपर्युक्त फिल्मों में स्वतन्त्रता-काल के गांधीवाद से ले कर आधुनिक काल की गांधीगिरी दर्शकों को बहुत पसन्द आयी। इस प्रकार हम देखते हैं, कि चलचित्र (सिनेमा) जो कि हमारे समाज का अभिन्न अंग रहे हैं। इन फिल्मों में चित्रित देश व समाज की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों को देखकर तत्कालीन समाज व देश की स्थिति का आकलन कर सकते हैं। पहले समाज में फिल्मों को देखना अच्छा नहीं समझा जाता था, अब यह अवधारणा बदल गयी है। फिल्मों मे देश की ज्वलन्त समस्या को दिखाया जाता है और उसका समाधान भी प्रस्तुत किया जाता है। यदि जिन्होने गांधी को नहीं पढ़ा है, समाज के ऐसे लोग गांधी पर बनी हुई फिल्में देखें, तो उन्हे गांधी दर्शन को समझने में बहुत अधिक सहायता मिल सकती है। फिल्मों का अनुकरण समाज में सर्वाधिक किया जाता है। अनुकरण के द्वारा समाज व राष्ट्र की दशा व दिशा बदली जा सकती है। जैसे साहित्य समाज का दर्पण होता है वैसे ही सिनेमा भी समाज का आईना है।

सुचिन्द्रम्

नवीन कुमार जग्गी, आशना
तथा सायशा

सुचिन्द्रम् एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है, जो तमिलनाडु के कन्याकुमारी में स्थित है। इस तीर्थ स्थान की धार्मिक आस्था श्रद्धालुओं को सहज ही अपनी ओर खींच लाती है। इस स्थान पर भव्य 'स्थानुमलयन मंदिर' है। यह मंदिर सनातन धर्म में मान्य त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को समर्पित है। यह त्रिदेव यहाँ एक लिंग के रूप में विराजमान हैं। मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। उस काल के कुछ शिलालेख मंदिर में अब भी मौजूद हैं। सत्रहवीं शताब्दी में इस मंदिर को नया रूप दिया गया था। मंदिर में भगवान विष्णु की एक अष्ट धातु की प्रतिमा एवं पवनपुत्र हनुमान की 18 फुट ऊँची प्रतिमा विशेष रूप से दर्शनीय है।

थानुमलायन मंदिर, दक्षिण भारत के सबसे ज्यादा भ्रमण किये जाने वाले मंदिरों में से एक है, और यह अनुमान लगाना कि क्यों, कोई कठिन नहीं। मंदिर का गेट दूर से ही दिखाई पड़ता है, क्योंकि 134 फिट की भव्य ऊंचाई वाला टावर खड़ा है। टावर की खासियत इस पर बनी हुई विभिन्न देवी - देवताओं की मूर्तियां व नक्काशी है, जिस पर पौराणिक कथाओं से चित्र व घटनाओं का चित्रण किया गया है।

मंदिर के प्रवेश पर एक नक्काशी युक्त दरवाजा है, जो 24 फिट की भव्य ऊंचाई के साथ खड़ा है। मंदिर की बाहरी दीवार के ठीक बगल में ही एक गलियारा है। इस गलियारे में इसकी लंबाई के अनुसार मंडपम् व मंदिर फैले हुए हैं।

मंदिर लगभग तीस देवी देवताओं को समर्पित है, इसलिए यह भगवान शिव एवं विष्णु दोनों के भक्तों के बीच लोकप्रिय है। गर्भगृह में एक बड़े शिवलिंग के साथ ही इसके बगल में विष्णु की रखी गयी है।

त्रिलिंगम

यह लिंगम् केवल शिव को ही नही अपितु भगवान विष्णु व ब्रह्मा को भी समर्पित हैं, इसलिये इसे त्रिलिंगम्

कहा जाता है। यह यहाँ की मुख्य मूर्ति है, जो त्रिदेव को समर्पित है। तीनों देवों को एक साथ प्रदर्शित करने के कारण यह पूरे भारतवर्ष में अनूठी हैं।

भगवान् हनुमान की मूर्ति

मंदिर के अंदर भगवान् हनुमान की अति विशाल मूर्ति स्थापित हैं, जो लगभग 22 फीट ऊँची है, जिसे एक ही ग्रेनाइट के पत्थर को काट कर बनाया गया हैं। यह एक तरह से भारत की सबसे बड़ी मूर्तियों में से एक है व साथ ही इस मंदिर की भी मुख्य पहचान है। एक मान्यता के अनुसार भगवान हनुमान् ने माता सीता को अशोकवाटिका में इसी रूप में दर्शन दिए थे, जिनका रेखांकन इस मंदिर में मूर्ति के रूप में किया गया है।

नंदी की विशाल प्रतिमा

भगवान शिव के वाहन नंदी की भी यहाँ एक विशाल मूर्ति है, जिसकी ऊंचाई 13 फीट व लंबाई 21 फीट हैं। यह भी नंदी की मूर्तियों में भारत वर्ष में विशालतम मूर्तियों में से एक है।

चार मुख्य स्तंभ

यहाँ चार मुख्य स्तंभ हैं, जो एक ही चट्टान के पत्थरों से बने हैं। इन चारों में से विभिन्न वाद्य यंत्रों सितार, मृदंग, जलतरंग व तंबूरे के संगीत की ध्वनि आती है। प्राचीन समय में इन्ही से मंदिर में पूजा अर्चना व आरती की जाती थी। इस चारों वाद्य यंत्रों की सबसे अनोखी बात यह है, कि ये चारों एक ही चट्टान से बने होने के बाद भी अलग-अलग धुन निकालते हैं।

नृत्य कक्ष

यहाँ 1035 स्तंभ हैं, जिनसे ध्वनियाँ निकलती हैं। इस कक्ष को नृत्य मंडप या कक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं।

मंदिर का गोपुरम्

मंदिर का गोपुरम् जो दूर से भी दिखाई पड़ता है, उस पर विभिन्न नक्काशियां करके चित्र व भित्तियां उकेरी गयी हैं। इसी के साथ यहाँ के विभिन्न स्तंभों पर भी अलग-अलग आकृतियाँ उकेरी गयी हैं, जिनसे मंदिर की भव्यता और भी अधिक बढ़ जाती हैं।

पौराणिक कथा

पौराणिक काल में इस स्थान पर 'ज्ञान अरण्य' नामक एक सघन वन था। इसी ज्ञान अरण्य में महर्षि अत्रि अपनी पत्नी अनुसूया के साथ रहते थे। अनसूया पतिव्रता स्त्री थी और पति की पूजा करती थीं। उन्हें एक ऐसी शक्ति प्राप्त थी कि वह किसी भी व्यक्ति का रूप परिवर्तित कर सकती थीं। भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पत्नियों को जब उनकी इस शक्ति के विषय में ज्ञात हुआ, तो उन्होंने अपने पति से देवी अनसूया के पतिव्रत धर्म की परीक्षा लेने को कहा।

उस समय ऋषि अत्रि हिमालय पर तप करने गए हुए थे। जब ब्रह्मा, विष्णु और महेश साधु के वेश में ऋषि के आश्रम पहुँचे और भिक्षा माँगने के लिए आवाज़ लगाई। उस समय देवी अनसूया स्नान कर रही थी। तीनों ने उनसे उसी रूप में बाहर आकर भिक्षा देने को कहा। जहाँ ब्राह्मणों को भिक्षा दिए बिना लौटाना अधर्म था, वहीं ऐसी अवस्था में परपुरुष के सामने आने से पतिव्रत धर्म भंग होता। देवी अनसूया को तो दोनों धर्मों का निर्वाह करना था। तब उन्होंने अपनी शक्ति के बल पर तीनों ब्राह्मणों को शिशु रूप में परिवर्तित कर दिया और उसी अवस्था में आकर भिक्षा प्रदान की।

जब त्रिमूर्ति के शिशु रूप में परिवर्तित होने का ज्ञान उनकी पत्नियों को हुआ, तो वे व्याकुल हो गईं। उन्होंने आश्रम में आकर देवी से क्षमा माँगी। तब उन्होंने उन्हें प्रभावमुक्त किया, लेकिन प्रतीक रूप में उन्हें आश्रम में रहने को कहा। उस समय त्रिमूर्ति ने अपने प्रतीक की स्थापना की, जिसके आधार पर ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपर शिव हैं।

एक अन्य कथा के अनुसार गौतम ऋषि ने देवराज इन्द्र को शाप दे दिया था। उनके अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए देवराज इन्द्र ने यहीं सुचिन्द्रम् में तपस्या की और उष्ण घृत से स्नान कर उन्होंने स्वयं को पाप से मुक्त किया और अर्धरात्रि को पूजा आरंभ की। पूजा संपन्न कर वे पवित्र हुए और देवलोक को प्रस्थान किया। तब से इस स्थान का नाम 'सुचिन्द्रम्' पड़ गया।

मंदिर की अनूठी स्थापत्य कला

17वीं शताब्दी में मंदिर को एक नया रूप प्रदान किया गया। मंदिर में करीब तीस पूजा स्थल हैं। इनमें से एक स्थान पर भगवान विष्णु की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान है। मंदिरप्रवेश के दाईं ओर सीता-राम की प्रतिमा स्थापित है। पास ही पवनपुत्र हनुमान की एक 18 फुट ऊंची प्रतिमा है। ऐसी मान्यता है, कि इसी विशाल रूप में हनुमान अशोकवाटिका में सीताजी के सामने प्रकट हुए और उन्हें श्रीराम की मुद्रिका दिखाई थी। पास ही गणेश मंदिर है, जिसके सामने नवग्रहमंडप है। इस मंडप में नौ ग्रहों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की हुई हैं।

अलंगर मंडप में चार संगीतमय स्तंभ हैं। ये अनोखे स्तंभ एक ही चट्टान से बने हैं, लेकिन इनसे मृदंग, सितार, जल तरंग तथा तंबूरे की अलग-अलग ध्वनि गुंजित होती है। पहले पूजा-अर्चना के समय इन्हीं स्तंभों से संगीत उत्पन्न किया जाता था। मंदिर में नटराज मंडप भी है। मंदिर में 800 वर्ष पुरानी नंदी की विशाल प्रतिमा भी दर्शनीय है। द्वार पर दो द्वारपाल प्रतिमाएं है। मंदिर का गोपुरम् 134 फुट ऊंचा है। यह सप्त सोपान गोपुरम् मंदिर को अद्भुत भव्यता प्रदान करता है। इस पर बहुत-सी आकर्षक मूर्तियां उकेरी हुई हैं। मंदिर के निकट ही एक सुंदर सरोवर है। इसके मध्य में एक छोटा-सा मंडप बना है। सुचिन्द्रम् कन्याकुमारी से मात्र 13 किमी. दूर है।

मंदिर के मुख्य देवता भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान ब्रह्मा को एक ही रूप में स्तानुमल्याम कहा जाता है। स्तानुमल्याम तीन देवताओं को दर्शाता है जिसमें 'स्तानु' का अर्थ 'शिव' है, 'माल' का अर्थ 'विष्णु' है और 'आयन' का अर्थ 'ब्रह्मा' है। भारत के उन मंदिरों में से एक है, जिनमें त्रिमूर्ति व तीनों देवताओं की पूजा एक मंदिर में की जाती है।

यह मंदिर माता के 51 शक्तिपीठों में से एक है। इस मंदिर में शक्ति को नारायणी के रूप पूजा जाता है और भैरव को संहारभैरव के रूप में पूजा जाता है। पुराणों के अनुसार जहाँ-जहाँ सती के अंग के टुकड़े, धारण किए वस्त्र या आभूषण गिरे, वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ अस्तित्व में आये। ये अत्यंत पावन तीर्थस्थान कहलाते हैं। ये तीर्थ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी सती ने उनके पिता दक्षेश्वर द्वारा किये यज्ञ कुण्ड में अपने प्राण त्याग दिये थे, तब भगवान शंकर देवी सती के मृत शरीर को लेकर पूरे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगा रहे थे इसी दौरान भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया था, जिसमें से सती के ऊपर के दांत इस स्थान पर गिरे थे।

पूर्वकालीन कथा के अनुरूप देवों के राजा इन्द्र को महर्षि गौतम द्वारा दिये गए अभिशाप से इस स्थान पर मुक्ति मिली थी।

सुचिन्द्रम् शक्तिपीठ में सभी त्यौहार मनाये जाते हैं विशेषकर शिवरात्रि, दुर्गापूजा और नवरात्र के त्यौहार पर विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। लेकिन दो प्रमुख त्यौहार हैं, जो इस मंदिर का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र हैं, 'सुचिंद्रम् मर्गली त्यौहार' और 'रथ यात्रा' हैं। इन त्यौहारों के दौरान, कुछ लोग भगवान की पूजा के प्रति सम्मान और समर्पण के रूप में व्रत (भोजन नहीं खाते) रखते हैं। त्यौहार के दिनों में मंदिर को फूलों व लाईट से सजाया जाता है। मंदिर का आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं के दिल और दिमाग को शांति प्रदान करता है।

राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्त्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे)

किन्तु हा ! गो - वधो नहि, रोध्यते पूर्णरूपेण प्रशासन् ।
गोवत्सल-श्रीकृष्ण - जन्मभूमौ किं गोवधः प्रशस्तोऽत्र ? ॥29॥

किन्तु हा ! दुःख है, प्रशासन द्वारा गोवध पूर्ण रूप में बन्द नहीं किया जाता, क्या गोवत्सल श्रीकृष्ण की जन्मभूमि में यहाँ गोवध प्रशंसनीय है ?

But it is sad that the administration did not completely stop killing of the cows. Is it commendable to slaughter cows in the birthplace of Krishna? |29|

गौः किं नहि राष्ट्रपशुः समुद्घोष्यते प्रशासनेन सद्योऽत्र ।
विना गोसेवां कृष्ण , आशु नहि प्रसीदति कदापि स्वभक्ते ॥30॥

यहाँ प्रशासन के द्वारा गौ राष्ट्रपशु क्यों नहीं, तत्काल उद्घोषित की जाती है ? बिना गोसेवा के किए अपने भक्तों पर श्रीकृष्ण कभी शीघ्र प्रसन्न नहीं होते हैं ।

Why shouldn't the Administration immediately pronounce cow a national animal? Krishna would not be quickly satisfied with his devotees if they don't take care of the cow.

गो-दानेन तु पुण्यं, निस्सीमं मिलतीति शास्त्रेषु कथितम् ।
गौरस्ति कामधेनुः, सुसेविता याहि सर्वान् कामान् दोग्धि ॥31॥

गोदान करने से तो निस्सीम पुण्य मिलता है, यह बात शास्त्रों में कही गई है । गौ तो कामधेनु है जो अच्छी तरह सेवा की हुई सभी कामनाओं को पूर्ण कर देती है।

It is written in the scriptures that one gets endless merits by gifting the cow. If properly taken care of, any cow can be Kamadenu and fulfil all the wishes.

गो - सेवां परित्यज्य, कुक्कुरान् सेवमानाः सगर्वमत्र ।
कीदृक्-पुण्यमर्जन्ति ? गुरुदेव ! भवानेव निगदतु साम्प्रतम् ॥32॥

गो - सेवा करना छोड़कर गर्व के साथ यहाँ कुत्तों की सेवा करते हुए लोग कैसा पुण्य अर्जित करते हैं ? हे गुरुदेव ! आप ही अब बताइए।

How will the people here, who instead of serving the cow but proudly serving the dog get any merit? Oh Gurudev, do tell!

दुग्धं दधि नवनीतं, तक्रं च मिलेत् किं गो-सेवां विनाऽत्र ? ।
एतदनुपलब्धिर्हा ! सारोग्यं सुदीर्घ - जीवनं निरुणद्धि ॥33॥

दूध दही मक्खन और छाछ क्या यहाँ गोसेवा किए बिना मिल जाए ? इनका प्राप्त न होना तो आरोग्य सहित सुदीर्घ जीवन को ही रोक देता है ।

Is it possible to get milk, curd and buttermilk without serving the cow? But without them, it is not possible to live a long healthy life. |33|

नाद्य गृहे गृहेऽधुना, दधि - मन्थनः घोषः श्रोतुमुपलभ्यते ।
बालाः पृच्छन्ति यदा, नवनीत - परिचयं हृदतीव तप्यते ॥34॥

आज घर घर में अब दही मथने की आवाज सुनने के लिए नहीं मिलती । जब बच्चे- बच्चियाँ नवनीत (मक्खन) का परिचय पूछती हैं तो हृदय बहुत सन्तप्त होता है ।

Today, it is not possible to hear the noise of making buttermilk. My heart pains me when the children ask how the butter is made.

कृष्णोऽपि यद्यवतीर्य, नवनीतं स्वं याचेत बालः क्वचित् ।
तर्हि तस्यापीच्छेय - मिह पूरयितुं न शक्येत कदापि हा ! ॥35॥

बालकृष्ण भी यदि अवतार लेकर कहीं अपना प्रिय मक्खन माँगे तो उनकी भी यह इच्छा यहाँ कभी नहीं पूरी की जा सके, हा ! दुःख है ।

It's a pity that if baby Krishna is born and if he asks for his favourite butter, here his desire will be unfulfilled.

(क्रमशः)

ISSN : 2582-6360

प्रकाशक : विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान – कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Website : vgda.in **Youtube :** www.youtube.com/c/vishwagurudeepashram **E-mail :** jaipur@yogaindailylife.org